REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

"डॉ. मंगल सेन एक अनुकरणीय व्यक्तित्व : एक अध्ययन"

सोनिका
शोधार्थी , राजनीतिक विज्ञान शास्त्र, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक.

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र हरियाणा प्रदेश में भारतीय जनसंघ एवं जनसंघ के पश्चात् भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता डॉ0 मंगलसेन के व्यक्तित्व पर लिखा गया है। शोध पत्र में डॉ0 मंगलसेन के जीवन वृत्तान्त का वर्णन किया गया है, जिसमें उनके सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन को प्रकाशित किया गया है इसके अतिरिक्त प्रदेश के गठन या निर्माण से लेकर हरियाणा प्रदेश की राजनीति में उनके कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ, भारतीय जनसंघ, आपातकाल, राजनीति और चुनाव आदि।

उद्देश्य : डॉ0 मंगल सैन का प्रदेश में सामाजिक एवं आर्थिक योगदान का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीक आंकड़ों का प्रयोग किया है इसमें साक्षात्कार, समाचार–पत्र, पुस्तकें और इटरनेट आदि का प्रयोग किया है।

भूमिका

डॉ० मंगल सेन हरियाणा प्रदेश बनने से पूर्व भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना 6 अप्रैल 1980 के पश्चात् भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता थे। डॉ० मंगल सेन हिन्दूत्व, राष्ट्रवाद व भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी थे। डॉ० मंगल सेन प्रारम्भ से ही आत्मविश्वासी, निर्भीक तथा निष्ठावान, सत्य का साथ देने वाले और सदैव सिद्धान्तों पर अग्रसर होने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने हमेशा सदमार्ग पर चलकर अपना जीवन व्यतीत किया। डॉ० मंगल सेन निष्ठावान व्यक्तित्व के धनी थे। वह महान समाज सेवी थे। डॉ० मंगल सेन ने सदैव निःस्वार्थ भावना से कार्य किया। डॉ० मंगल सेन ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई चाहे वह गौ–हत्या बन्द कराने सम्बन्धी आंदोलन हो या हिन्दी आंदोलन या कश्मीर समस्या हो या हरियाणा के हितों को ध्यान में रखते हुए कोई भी आंदोलन हो, उन्होंने सदैव अपने कर्त्तव्य का पालन किया।[1]

जन्म

डॉ० मंगल सेन का जन्म 27 अक्टूबर 1927 को अविभाजित भारत के सरगोधा जिले के झावरिया गाँव में हुआ था। इस समय यह गाँव पाकिस्तान देश में है। उनके पिता का नाम ***"श्री साईदित्ता मल"*** तथा माता जी का नाम ***"श्रीमती शांति देवी"*** था। डॉ० मंगल सेन जी चार भाई थे। व्यापार तथा जीवन–यापन के लिए इनका परिवार बर्मा (म्याँमार) चला गया। डॉ० मंगल सेन का बाल्यकाल म्याँमार में ही बीता लेकिन कुछ वर्षों के बाद इनका परिवार वापिस भारत आ गया और जालंधर में बस गया।

शिक्षा

डॉ० मंगल सेन ने जालंधर के ही एक विद्यालय से दसवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण डॉ० मंगल सेन की शिक्षा बाधित हुई। जालंधर के छावनी में डॉ० साहब ने लेखाधिकारी के रूप में कार्य भी किया। दो वर्ष तक नौकरी करने के पश्चात् उन्होंने इस नौकरी को जल्द ही छोड़ दिया।

डॉ० साहब ने बी०ए०, एल०एल०बी० तक की शिक्षा प्राप्त की। एम०ए० की परीक्षा के समय उन्हें जेल में भेज दिया गया था। वह यह परीक्षा न दे सके। डॉ० मंगल सेन होम्योपैथिक चिकित्सक के रूप में भी जनता की सेवा करते थे।[2]

संघ से सम्बन्धता

डॉ० मंगल सेन का बाल्यकाल से ही स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव हो गया था। वह बचपन से ही संघ की शाखाओं में जाते थे। यह संघ का ही प्रभाव था कि उनमें राष्ट्रप्रेम व समाज की सेवा भावना के भाव जागृत हुए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रभाव ने ही उन्हें हिन्दूत्व आदर्शों का पोषक तथा मान्यताओं पर चलने वाले जीवन की ओर अग्रसर किया। उन्होंने आजीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक के रूप में अपना जीवन समप्रित कर दिया। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और 1946 में जम्मू–कश्मीर से अपना प्रचारक जीवन प्रारम्भ किया। इस क्रम का प्रभाव संयुक्त पंजाब (हरियाणा) में भी पड़ा।

वर्ष 1948 में गाँधी जी की हत्या के पश्चात् डॉ० मंगल सेन को भी जेल भेज दिया गया क्योंकि काँग्रेस ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर आरोप लगाते हुए उसे प्रतिबंधित कर दिया। यही वह समय था जब पहली बार डॉ० मंगल सेन ने जेल की यात्रा की। डॉ० साहब के जीवन में 6 वर्ष का कार्यकाल जेलों में ही व्यतीत हुए।[3]

राजनीतिक जीवन

डॉ० मंगल सेन का राजनीतिक जीवन भारतीय जनसंघ की स्थापना काल से ही माना जाता है। भारत आने पर हरियाणा, रोहतक शहर डॉ० मंगल सेन की कर्मभूमि बना। रोहतक में डॉ० मंगल सेन पहुँचे, तब वहाँ श्री राम प्रकाश धीर संघ प्रचारक के रूप में कार्यरत थे। इनके साथ डॉ० मंगल सेन के पहले से ही घनिष्ठ संबंध थे। इनकी मुलाकात जालंधर में संघ की शाखओं में हुई थी। पुरानी मित्रता के चलते दोनों का मिलना रोहतक में बार–बार होता था और घंटो चर्चाएं भी होती थी। डॉ० मंगल सेन का राजनैतिक जीवन काफी रोचक रहा। 1977 में उद्योग व शिक्षा मंत्री के रूप में रहे, 1982 में हरियाणा प्रदेश के गृह–मन्त्री तथा 1987 में वह उप–मुख्यमंत्री भी बने। डॉ० मंगल सेन जी ने हरियाणा के अन्दर एक नया इतिहास रचा। उन्होंने ग़ैर–काँग्रेसी दलों के साथ गठबंधन करके हरियाणा राज्य को काँग्रेस मुक्त भी बनाया। भारत में प्रथम बार गठबंधन के आधार पर सरकार बनाने का श्रेय डॉ० मंगल सेन जी को ही दिया जाता है।

डॉ० मंगल सेन ने जनता की मांग पर पहला आम चुनाव 1957 में भारतीय जनसंघ पार्टी से लड़ा और विजय भी प्राप्त की। उन्होंने लगातार विधानसभा के चुनाव लड़े और वह सात बार विजयी रहे। उन्हें केवल दो बार 1972 व 1985 के उप–चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

हरियाणा प्रांत की स्थापना में योगदान

हरियाणा को एक अलग स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए उन्होंने अनेक आंदोलन किए तथा विधानसभा में इसके पक्ष में लगातार जनसमर्थन भी जुटाते रहे। डॉ० मंगल सेन जी ने प्रोफेसर शेर सिंह जो कि आर्य समाज से संबंध रखते थे, के साथ मिलकर गौ–रक्षा आंदोलन की शुरुआत भी की थी।

हरियाणा स्थापना के समय हिन्दी आंदोलन चलाया गया। इस आंदोलन में डॉ० मंगल सेन ने विधानसभा का बँटवारा किए जाने की माँग को रखा तथा इसके लिए एक कमेटी भी बनाई ताकि विधानसभा का बँटवारा किया जा सके। डॉ० मंगल सेन ने हिन्दी इलाके के लोगों से पर्चे भी भरवाए ताकि हरियाणा राज्य की स्थापना ज्यादा से ज्यादा हिन्दी लोगों की संख्या को आधार बनाकर कराई जा सके। हरियाणा स्थापना के पश्चात् हिन्दी बहुलता वाले क्षेत्र हरियाणा में आ गए। डॉ० मंगल सेन शरणार्थियों को 'पुरुषार्थी' कह कर सम्बोधित करते थे। हरियाणा निर्माण का संघर्ष लम्बे समय तक चला। डॉ० मंगल सेन इसके प्रमुख नेता रहे।

हरियाणा बनने के बाद प्रदेश के निर्माण में उन्होंने अनुकरणीय योगदान दिया। रोहतक तथा डॉ० मंगल सेन एक दूसरे के पूरक बन गए।[4]

समाज सेवी

डॉ० मंगल सेन ने राजनीति के अलावा अनेक सामाजिक कार्य भी किए। इसी के फलस्वरूप उन्होंने 1971 में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जिसकी शाखाएं आज हरियाणा के कई जिलों में हैं।

हरियाणा विकास में योगदान

हरियाणा के विकास में भी डॉ० मंगल सेन ने अनेक कार्य किए। डॉ० मंगल सेन के ही प्रयासों के परिणाम से रोहतक में मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई जो आज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रूप में हरियाणा प्रदेश में अग्रणी है। इसका लाभ जिले के लोग ही नहीं अपितु पूरे राज्य के लोगों को मिल रहा है।

शिक्षा मंत्री पद पर रहते हुए इन्होंने रोहतक विश्वविद्यालय का नाम हरियाणा के महान व्यक्तित्व, ज्ञानवाहक महर्षि दयानन्द के नाम पर रखा। डॉ० मंगल सेन सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राजनीति में उनके सहयोगी ही नहीं अपितु विरोधी भी उनका आदर व सम्मान करते थे। उन्होंने कभी भी दल–बदल का समर्थन नहीं किया। आजीवन इसके विरोधी रहे। डॉ० मंगल सेन प्रखर वक्ता थे। उनका त्याग, निःस्वार्थ समाज की सेवा, अत्याचार व अन्याय के खिलाफ विरोध उनके महत्वपूर्ण गुण थे। विधानसभा में उनका इतना प्रभाव था कि सभी उन्हें सुनने के लिए उत्सुक रहते थे। डॉ० मंगल सेन अपने कार्यकर्ताओं को हमेशा प्रेम व स्नेह देते थे। वह जनता के मध्य रहकर ही कार्य करते थे। वह प्रत्येक घड़ी जनसेवा के लिए तत्पर रहते थे। यदि रात को भी किसी आम जन को उनकी आवश्यकता होती थी तो वह स्वयं ही उठकर उनका कार्य करवाते थे।[5]

निधन

2 नवम्बर 1990 को अयोध्या मंदिर निर्माण हेतु कार सेवा में जाने हेतु तैयार हुए और भिवानी स्टैण्ड दुर्गा मन्दिर के सामने डॉ० साहब ने एक जनसभा का आयोजन किया। डॉ० साहब ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि रोहतक निवासियों अयोध्या में हम राम–मन्दिर निर्माण हेतु जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने राम भक्तों पर गोलियां चलवाई हैं और हम भी जा रहे हैं। हम भी गोलियों का शिकार हो सकते हैं। यदि बचकर वापिस आ गए तो ठीक है। यदि बचकर वापिस न आए तो आप इसे हमारी आखिरी जनसभा समझ लेना। और वास्तव में ही 2 नवम्बर 1990 की वह जनसभा उनकी आखिरी जनसभा साबित हुई। 3 नवम्बर 1990 को लखनऊ में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जिनमें उनके साथ 48 लोग शामिल थे। लखनऊ में गिरफ्तारी के पश्चात् उन्हें पीलीभीत जेल में भेज दिया गया। वहाँ से सितारगंज जेल भेज दिए गए। 8–10 दिन जेल में रहने के पश्चात् वह वापिस रोहतक आ गए और 2 दिसम्बर 1990 को शालिमार बाग़ दिल्ली में डॉ० साहब के भतीजे के घर पर हृदयगति रुकने से उनका देहान्त हो गया।[7]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रदेश की राजनीति में संयुक्त पंजाब के समय में ही नही बल्कि हरियाणा राज्य के गठन के बाद भी हर समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह राष्ट्रीय स्वयं संघ के रूप में हो चाहे वह हरियाणा प्रदेश के निर्माण में योगदान हो या प्रदेश सरकार में मंत्री, गृहमंत्री या उपमुख्यमंत्री के रूप में हो। डॉ0 मंगल सेन ने प्रदेश में अनेक सामाजिक कार्य किए। शिक्षा के क्षेत्र में व अन्य जनकल्याण सम्बन्धी कार्यो के लिए उन्हे सदैव स्मरण किया जाएगा।

सन्दर्भ सूची

1 स्मारिका डॉ० मंगलसेन शोद्यपीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, 26 अप्रैल 1980, संदेश, श्री रामबिलास शर्मा (भाजपा नेता)

2 https://haryanabjp.org>bjp>2018/09/05

3 https://haryanabjp.org>bjp>2018/09/05

4 साक्षात्कार श्री श्याम सुंदर पसरीजा, पूर्व प्रवक्ता, (वाणिज्य विभाग) हिन्दू कॉलेज, रोहतक
5 साक्षात्कार लवलीन टूटेजा लवली, मंगल सेन स्मृति न्यास हरियाणाध्यक्ष
6 साक्षात्कार जगदीश कुमार सैनी, राजनैतिक सचिव, डॉ० मंगल सेन (1985–1990), वर्तमान में प्रदेश संयोजक बूथ संकलन हयिाणा भाजपा, प्रदेश कार्यालय भाजपा, रोहतक

सोनिका
शोधार्थी , राजनीतिक विज्ञान शास्त्र, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक.